IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

टिकुली कला के प्रमुख कलाकार- 'अशोक कुमार बिस्बास'

[1]गीतांजली गालव, [2]प्रो. मीनाक्षी ठाकुर

[1]शोधकर्ता, [2]पर्यवेक्षक (एसोसिएट प्रोफेसर)

[1]चित्रकला विभाग

[1]दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 282005 (भारत)

सार

टिकुली कला बिहार की एक विशिष्ट पारंपरिक चित्रण शैली है जिसकी ऐतिहासिक जड़ें मौर्यकालीन समाज, राजमहलों के श्रृंगार और स्वर्ण-पत्रों द्वारा विन्यस्त सौंदर्य परंपरा में मिलती हैं। यह कला कालांतर में काँच के टुकड़ों पर सजावटी रूप में विकसित हुई किंतु प्लास्टिक के औद्योगिक उत्पादन ने इसे लगभग विलुप्ति की ओर पहुँचाया। 20वीं शताब्दी में उपेंद्र महारथी ने जापान प्रेरित तकनीक के माध्यम से इसका पुनरुद्धार आरंभ किया किंतु वास्तविक पुनर्जागरण और वैश्विक पहचान का श्रेय समकालीन कलाकार अशोक कुमार विश्वास को जाता है, जिन्होंने 2002 में सरकारी नौकरी छोड़ पूर्णतः टिकुली कला को समर्पित जीवन चुना। पटना व दानापुर क्षेत्र में महिलाओं को संगठित कर उन्होंने इसे आजीविका, स्वाभिमान और महिला सशक्तिकरण का औज़ार बनाया 6000 से अधिक ग्रामीण, निम्न व मध्यवर्गीय महिलाओं को निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान कर कला को घर घर तक पहुँचाया। उनका नवाचार हार्डबोर्ड व एम.डी.एफ. पर चित्रकारी, दैनिक उपयोग वस्तुओं पर डिज़ाइन तथा समसामयिक विषयों का प्रवेश ने टिकुली को सजावटी वस्तु से वैश्विक डिज़ाइन ब्रांड तक विस्तृत किया। भारत, चीन, रूस, अमेरिका, थाईलैंड और सिंगापुर तक इस कला की माँग तथा एशियाड 1982 सहित अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों ने इसे विश्वपटल पर प्रतिष्ठा प्रदान की। अतः आज टिकुली कला एक बिंदी नहीं बल्कि बिहार का वैश्विक सांस्कृतिक हस्ताक्षर है।

मुख्य बिंदु लोक कला, बिहार, टिकुली कला, बिंदी, मृतप्रायः, अशोक कुमार विश्वास।

भूमिका

भारतीय कला-परंपरा विविधता, ऐतिहासिकता और अभिव्यक्ति-वैभव से परिपूर्ण है जहाँ लोकशिल्प केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं बल्कि जनजीवन, सामाजिक संरचना, आस्था और आजीविका का भी साधन रहा है। इसी लोक-विरासत में बिहार की टिकुली कला एक विशिष्ट अध्याय के रूप में प्रतिष्ठित है। यह कला परंपरा, इतिहास, सौंदर्य-शास्त्र और तकनीकी-निपुणता का अद्भुत संगम है जो बिहार की पहचान के रूप में देश-विश्व के सामने उभरती है। टिकुली कला केवल शिल्प नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक प्रतीक है जहाँ बिंदी, स्त्री-स्वरूप, आध्यात्मिक ऊर्जा, सौभाग्य, परंपरा और सामाजिक-व्यवस्था सभी एक साथ संवहित हैं। वर्तमान समय में यह कला अपनी ऐतिहासिक जड़ों से आगे बढ़ते हुए वैश्विक मंच तक पहुँच चुकी है जिसका श्रेय मुख्यतः कलाकार अशोक कुमार बिस्बास को जाता है जिन्होंने इसे पुनर्जीवित, संरक्षित और नवाचार के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई।

टिकुली शब्द का अर्थ और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

'टिकुली' शब्द भारतीय स्त्री-श्रृंगार के उस गोलाकार चिह्न से सम्बद्ध है, जिसे महिलाएँ माथे के मध्य स्थान पर धारण करती हैं। यह केवल श्रृंगार-चिह्न नहीं बल्कि भारतीय आध्यात्मिक प्रतीक-चिन्ह भी है। इसे "आज्ञा-चक्र" अर्थात "ज्ञान-दृष्टि-केंद्र" माना गया है जो एकाग्रता, विवेक और अंतर्ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय परंपरा में इसे "तीसरी आँख" का प्रतीक भी कहा गया है जो शिव-तत्व, चेतना और ऊर्जा-केंद्र से जुड़ा है। बिंदी या टिकुली विवाहित स्त्री के सौभाग्य, सुहाग और सामाजिक-मर्यादा का भी चिह्न है। यही सांस्कृतिक-आध्यात्मिक अर्थ बाद में शिल्प-कला के रूप में विकसित हुए और "टिकुली कला" के रूप में आकार ग्रहण करते गए।

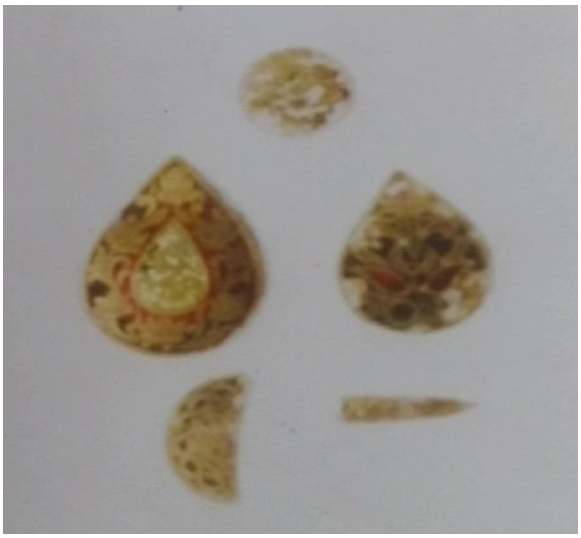

टिकुली कला का ऐतिहासिक विकास

टिकुली का इतिहास प्राचीन भारत से जुड़ा हुआ है। इतिहासकारों के अनुसार मौर्य और गुप्त काल (लगभग 2500 वर्ष पूर्व) में पाटलिपुत्र की महिलाएँ अपने श्रृंगार में बिंदी का प्रयोग करती थीं। चीनी यात्री फाह्यान ने भी अपने यात्रा-वृत्तांत में इस चिह्न के उपयोग का उल्लेख किया। लगभग 800 वर्ष पूर्व पटना में बिंदी-प्रतीक से प्रेरित होकर एक कुटीर-आधारित सूक्ष्म कला-शिल्प विकसित हुआ जिसे "टिकुली कला" कहा गया। प्रारम्भिक काल में टिकुली-चित्रांकन काँच की छोटी प्लेटों पर सोने की परत और काले रंग के साथ सूक्ष्म डिजाइन बनाकर किया जाता था। यह कला सौंदर्य-कौशल और धैर्य-प्रधान शिल्प था जिसे तैयार करने में कई-कई दिन लगते थे। मध्यकाल तक यह कला पटना क्षेत्र में लगभग 500 परिवारों की आजीविका का मुख्य स्रोत थी और इसमें हिन्दू-मुस्लिम समुदाय समान रूप से संलग्न थे।

कला का पतन और विलुप्ति का संकट

औद्योगिक तकनीक, मशीन-निर्मित उत्पादों की सस्ती उपलब्धता, कलाओं का संस्थागत पतन और राजकीय संरक्षण की कमी के कारण टिकुली कला का प्रसार धीरे-धीरे कम होता गया। बीसवीं सदी के मध्य तक यह कला लगभग पूर्णतः विलुप्त होने की कगार पर थी। कलाकारों का पलायन, युवा पीढ़ी का रुचि-ह्रास और बाजार संकट के चलते यह शिल्प लगभग समाप्त हो चुका था। ठीक इसी समय बिहार के प्रसिद्ध कला-संरक्षक उपेन्द्र महारथी ने इस कला को पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया। उनके मार्गदर्शन से टिकुली कला को शोध-आधारित स्वरूप, पुनर्गठन, डिज़ाइन-सुधार और प्रशिक्षण-प्रणाली के रूप में नया जीवन प्राप्त हुआ।

अशोक कुमार बिस्वास : पुनर्जागरण के अग्रदूत

टिकुली कला के आधुनिक पुनरुत्थान, नवाचार तथा वैश्विक प्रतिष्ठा के पीछे सबसे महत्वपूर्ण नाम है- अशोक कुमार बिस्वास (जन्म: 3 अक्टूबर 1956, डिहरी-ऑन-सोन, बिहार)। उनका जन्म मध्यम-वर्गीय परिवार में हुआ जहाँ पिता कम्पाउण्डर थे और माता सिलाई कर परिवार का सहयोग करती थीं। बचपन अत्यंत संघर्षपूर्ण था वे स्वयं बताते हैं कि तीसरी कक्षा तक उनके पास चप्पल तक नहीं थीं और विद्यालय जाने के लिए धूप में पेड़ों की छाया पकड़कर चलना पड़ता था। कला की रुचि स्कूल समय से ही विकसित हुई, जिसे उनके

कला-शिक्षक शिवप्रसाद ने प्रोत्साहित किया। पारिवारिक आर्थिक दबाव के कारण वे पढ़ाई के साथ भाई की दुकान पर साइन-बोर्ड पेंटिंग का काम करने लगे। यहीं पर इनेमल-पेंट, अक्षरांकन और रेखांकन की तकनीक ने उनके हाथों को गढ़ा।

उनके जीवन का निर्णायक क्षण तब आया जब पटना के उपेन्द्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान से जुड़े डिज़ाइनर जी.पी. बक्शी ने उनकी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें टिकुली का प्रशिक्षण लेने पटना आने को कहा। पटना पहुँचकर उन्होंने टिकुली कला-विशेषज्ञ टी.के. सेनगुप्ता और प्रशिक्षक लालबाबू गुप्ता के मार्गदर्शन में छह माह का पाठ्यक्रम मात्र तीन माह में पूरा किया। प्रशिक्षण समाप्त होते ही उन्हें टिकुली के ऑर्डर मिलने लगे, जिससे उनकी कला-यात्रा प्रारंभ हुई।

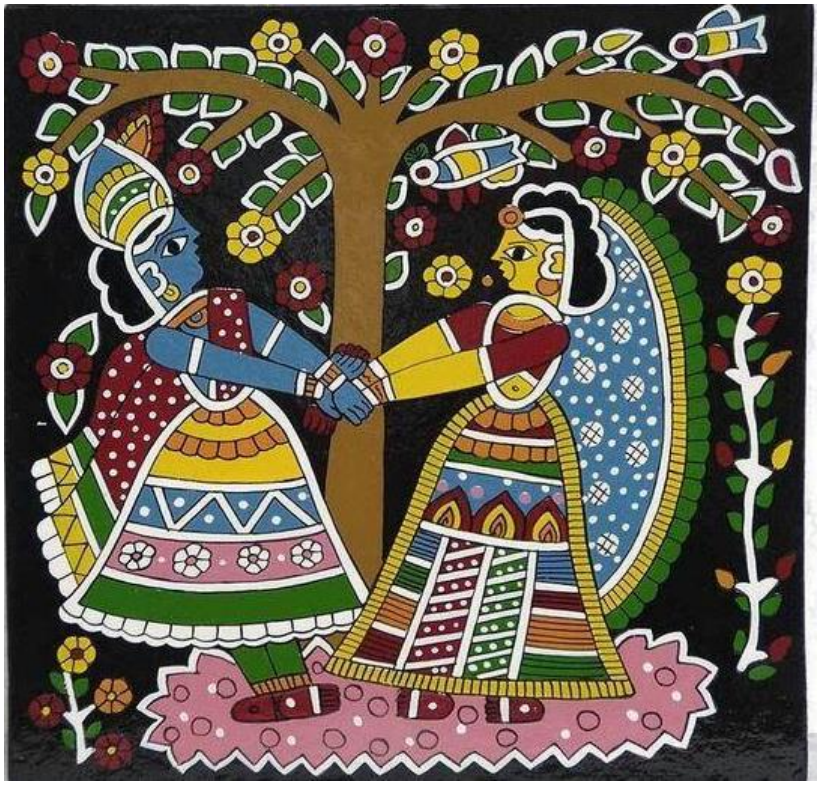

शिक्षा, नौकरी और कला-समर्पण

बिस्बास ने 1975 में इंटरमीडिएट की परीक्षा प्राइवेट रूप में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की, 1979 में स्नातक तथा चंडीगढ़ के प्राचीन कला केंद्र से 'चित्र-विशारद' उपाधि प्राप्त की। वे असम की एक कंपनी में सुपरवाइजर रहे, फिर बिहार लौटकर कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESI) में सहायक पद पर नियुक्त हुए। परंतु कला उनका अंतिम ध्येय था इसलिए शनिवार-रविवार के अवकाश में वे महिलाओं को निःशुल्क टिकुली-प्रशिक्षण देने लगे। उनका कथन था- "यदि यह कला केवल मैं बनाता रहूँ, तो मेरे बाद यह समाप्त हो जाएगी।" इसी आदर्श के कारण उन्होंने अपना ज्ञान समाज को सौंपा।

महिला-सशक्तिकरण हेतु प्रशिक्षण-मॉडल

पटना, पटना सिटी, दानापुर और आसपास के क्षेत्रों में उन्होंने महिला-समूह गठित कर हजारों महिलाओं को प्रशिक्षण दिया। वे सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराते, प्रशिक्षण मुफ्त देते और तैयार वस्तुएँ स्वयं खरीदकर उचित मूल्य प्रदान करते थे। इस मॉडल ने हजारों वंचित महिलाओं को घर बैठे रोजगार, आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीवन दिया। आज यह कला बिहार के महिला-कुटीर-उद्योग के रूप में विस्तृत है।

तकनीकी नवाचार और डिज़ाइन-परिवर्तन

उनके नवाचारों ने टिकुली कला को वैश्विक स्तर की प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाया। उनके प्रमुख सुधार थे-

- लकड़ी के स्थान पर MDF बोर्ड का उपयोग- हल्का, टिकाऊ और सस्ता
- एक-मोटिफ़ की जगह बहु-मोटिफ़ डिज़ाइन
- सजावटी बॉर्डर शैली का विकास (2000 के बाद)
- 2014 से गोल्ड-कलर का प्रयोग
- विषय-विस्तार- पौराणिक कथा से आगे ग्रामीण-जीवन, स्त्री-परिश्रम, त्योहार, प्रकृति
- टिकुली को सजावटी वस्तुओं के साथ उपयोगी वस्तुओं- ट्रे, पेन-स्टैंड, वॉल-हैंगिंग, कोस्टर में रूपांतरण

इन परिवर्तनों ने टिकुली कला को आधुनिकता, बाज़ार-उपयुक्तता और सौंदर्य-वैभव प्रदान किया।

राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मान्यता

अशोक बिस्वास की कला को राष्ट्रीय पहचान 1982 में तब मिली जब एशियाई खेल (एशियाड) में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की पहल पर खिलाड़ियों को टिकुली उपहार स्वरूप दी गई। इसके बाद दिल्ली हाट, ताज महोत्सव, सूरजकुंड मेला, भारतीय व्यापार मेला आदि में उनकी कला ने रिकॉर्ड बिक्री दर्ज की। 2002 में उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर पूर्ण जीवन टिकुली के लिए समर्पित कर दिया। MSME विभाग व केंद्र सरकार की गुरु-शिष्य योजना के अंतर्गत 2018–19 में बिहार का पहला औपचारिक टिकुली प्रशिक्षण उनके निर्देशन में हुआ। उनकी प्रदर्शनी भूटान, दक्षिण कोरिया, रूस, अमेरिका, सिंगापुर, थाईलैंड, स्पेन और 2024 में जापान में आयोजित की गई।

सम्मान और उपलब्धियाँ

अब तक वे लगभग 8000–10,000 **लोगों को प्रशिक्षित कर चुके हैं जिनमें दो-तिहाई महिलाएँ हैं। बिहार सरकार ने** 2007-08 **में स्टेट अवॉर्ड,** 2009 **में कलाश्री एवं विहार कला पुरस्कार प्रदान किया। उन्होंने** 40+ **राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त किए। और अंततः** 2024 **में उन्हें पद्मश्री प्रदान किया गया जो न केवल उनका व्यक्तिगत सम्मान है बल्कि बिहार की सांस्कृतिक धरोहर का भी गौरव है।**

निष्कर्ष

अशोक कुमार बिस्वास केवल एक कलाकार नहीं, एक आंदोलन, एक संस्था और एक युग हैं। उन्होंने लगभग लुप्त होती कला को पुनर्जीवित किया, उसे तकनीकी-रूप से आधुनिक बनाया, समाज को लौटाया और हजारों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया। टिकुली कला उनके कारण आज वैश्विक मंच पर सम्मानित है। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि कला केवल सौंदर्य नहीं समाज परिवर्तन, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का मार्ग भी है। उनके शिष्यों में से कई कलाकार राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं जिनमें तपन, मधु कुमारी, संतोष कुमार, दीपु कुमार, सबीना इमाम, रूपा कुमारी, खुशबू कुमारी, किरण कुमारी और पूजा कुमारी प्रमुख हैं। यह श्रेणी दर्शाती है कि कला केवल उनके हाथों तक सीमित नहीं रही बल्कि उन्होंने उसे पीढ़ीगत हस्तांतरण के माध्यम से सुरक्षित रखा। उनके लिए टिकुली केवल कला नहीं जीवन-दृष्टि, सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व है।

अशोक कुमार बिस्बास एक कलाकार भर नहीं, बल्कि टिकुली कला के 'आधुनिक महर्षि' हैं जिन्होंने लगभग विलुप्त होती कला को पुनर्जीवित किया उसे समाज की महिलाओं के हाथों में सौंपा और भारतीय संस्कृति की इस धरोहर को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया। उनका जीवन संघर्ष, श्रम, नवाचार और सामाजिक समर्पण का वह जीवंत पाठ है जो भविष्य की कला-पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बना रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Biswas, Ashok Kumar, Personal Interview with Ashok Kumar Biswas by Geetanjali Galav. In person, 12 sep. 2025.
- Imam, Sabina, Personal Interview with Sabina Imam by Geetanjali Galav. In person, 12 sep. 2025.
- Kumar, Santosh, Personal Interview with Santosh Kumar by Geetanjali Galav. In person, 12 sep. 2025.
- Upendra Maharathi Shilp Anusandhan Sansthan. Design and Technology Development Workshop for Tikuli Art at Tikuli Cluster, Danapur, 16 July – 20 August 2018. Sponsored by Office of Development Commissioner (Handicraft), Ministry of Textiles, Govt. of India, New Delhi. UMSAS, https://umsas.org.in/ova_doc/design-report-on-tikuli-craft-patna-cluster/
- Fashion Communication Department, National Institute of Fashion Technology. Tikuli Art: Sona Art - Patna. Mitha Farms, Patna, Bihar, 800001. Issuu, https://issuu.com/randheerkumarrd/docs/craft_promotion_final.
- Bhartia, Swati. Design Awareness Programme Report: Tikuli Cluster, Digha, Distt- Patna (Bihar), India. Submitted for DCS, MSMEs Scheme 2014.
- Kamra, Surbhi. "Tikuli Art Unveiled: Stories Behind Tikuli Art." Craft Masala by iTokri, iTokri, 30 Jan. 2024, https://itokri.com/blogs/craft-masala-by-itokri/tikuli-art-unveiled-stories-behind-tikuli-art.